आज भारत के इतिहास का महत्त्वपूर्ण क्षण है जब हम एकत्रित हुए हैं भारतीय संस्कृति एवं दर्शन में मानव अधिकार पर विचार–विमर्श हेतु। यह चिंतन परम्पराओं को समझने व उन्हें प्रचलित करने हेतु आवश्यक है। हम "**Planet Earth**" के संरक्षक **(Custodian)** हैं। भारतीय संस्कृति में मानवता संरक्षण की शक्ति है। आज विश्व प्रकृति से खिलवाड़ के कारण एक विकट स्थिति में है। ऐसे में मानवीय मूल्यों, जीव व वनस्पति (**Flora and fauna**) का संरक्षण एवं नैतिकता पर आधारित तकनीक (**technology**) का उपयोग विनाश से बचने के लिए आवश्यक है।

मैं इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अमित शाह जी का हार्दिक स्वागत व अभिनन्दन करता हूं। आपने अपने अतिव्यस्त कार्यक्रम में से कुछ समय निकाला इस हेतु मैं आपका हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं। साथ ही, कार्यक्रम में उपस्थित अन्य

गणमान्य अतिथि.....तथा .....

.....एवं सभागार में उपस्थित अन्य समस्त अतिथिगणों का स्वागत, वंदन व अभिनन्दन करता हूं।

भारतीय संस्कृति, दर्शन, साहित्य, कला, वास्तुकला में मानवीय मूल्यों का प्रारम्भिक विकास पूर्णतः परिलक्षित है।

Dr. Arnold Toynbee ने 'मानव के उत्थान के इतिहास' के संबंध में उल्लेख किया है–

"It is already becoming clear that a chapter which had a Western beginning will have to have an Indian ending if it is not to end in the self-destruction of the human race..."

"Here we have an attitude and sprit that can make it possible for the human race to grow together into a single family"

शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत ने विश्व को नया दर्शन दिया है। आस्थाओं के संगम में भारतीय सभ्यता, व्यक्ति के नैतिक उत्थान, समानता व करुणा पर सदैव आधारित रही है। मानव सभ्यता की उन्नति का मापदण्ड सद्बुद्धि, नैतिक व आध्यात्मिक उत्थान है न कि धन या भौतिक संपदा।

मानव अधिकार महत्त्वपूर्ण हैं। मानव अधिकारों संबंधी 'यूनिवर्सल डिक्लेरेशन' सन 1948 में लागू हुआ जिसके (अनुच्छेद 9 के) अनुसार, सभी मानव–समान सम्मान व अधिकारों के पात्र हैं। जबकि वेद, उपनिषद् व महाभारत में जो कि 3000–1500 ईस्वी पूर्व से प्रचलित हैं, उनमें सभी की समानता, सामाजिक कल्याण का सिद्धांत व आध्यात्मिक उन्नति से मोक्ष प्राप्ति लक्ष्य रहा है। 'ऋग वेद' जिसे यूनेस्को ने विश्व की धरोहर घोषित किया है, के अनुसार तन, गृह व जीवन की स्वतंत्रता मानव हेतु

आवश्यक मानी गई। भारतीय दर्शन में अधिकार व दायित्व का निर्वाह साथ–साथ आवश्यक है।

हमारे देश में विभिन्न धर्मों में मानव अधिकारों का पालन सुनिश्चित किया गया है। इन सभी में 'सबका मंगल हो, कल्याण हो, सब सुखी रहें', यह भावना निहित है। धर्म से अर्थ कमाया जाना व इसका एक भाग पात्र व्यक्ति को दान करना हमारी संस्कृति की विशेषता है। धर्मानुसार व्यवहार ही मानवोचित है।

कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में प्रतिपादित किया गया है कि राज्य द्वारा समाज में ऐसी आदर्श परिस्थितियों का निर्माण करना आवश्यक है जिससे कर्त्तव्य, भौतिक धन और संतुष्टि (धर्म, आस्था और काम) की पूर्ति हो। अथर्वशास्त्र और मनुस्मृति में कल्याणकारी राज्य की स्थापना की परिकल्पना की है। बौद्ध और जैन धर्म के

विद्वानों ने भी मानव समाज में मनुष्य की समानता का उपदेश दिया और भेदभाव का प्रतिकार किया।

पुरातन भारतीय अर्थशास्त्र के अनुसार, जो खेती करते हैं उन्हें ही भूमि रखने का अधिकार है (**tiller should own the land**)। भारतीय संविधान के आर्टिकल 39 (b) (c) के अनुसार, राज्य की संपदा का वितरण समाज में समान रूप से होना आवश्यक है व उसका कुछ हाथों में केन्द्रीयकरण नहीं होना चाहिए। 'मनुस्मृति' के अनुसार, अनाथ, वृद्ध, बच्चे, असहाय व गर्भवती महिलाओं को पौष्टिक आहार प्रदान करना शासकों का पुनीत कर्तव्य है।

'धर्मशास्त्र' के अनुसार, शासक को कानून के 'अनुसार', बिना भेदभाव के निर्णय लेना चाहिए। याज्ञवल्क्य, नारद स्मृति के अनुसार, स्वतंत्र न्यायालय एवं न्यायिक प्रक्रिया के आधार पर

प्रकरण का निराकरण आवश्यक है। जनतंत्र की सार्वभौमिकता, के आधार पर सबको समान न्याय व अधिकार धर्म का भाग रहा है। यही सिद्धांत यूनिवर्सल डिक्लेरेशन (आर्टिकल 10) में भी उल्लेखित है।

मानव कल्याण की आधारशिला "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया" है। शांति व सद्भाव, सर्वत्र हो व सब सुखी हों। सबको अपनी इच्छा अनुसार धर्म अपनाने व भगवान को मानने की स्वतंत्रता, हिंदू धर्म व भारत में अन्य प्रचलित धर्मों में प्रदत्त की गई है, जो कि संविधान (आर्टिकल 25/26) व डिक्लेरेशन (आर्टिकल 18) का भाग है। 'सर्व धर्म सम्भाव' हमारी मान्यता है व किसी एक धर्म का एकाधिकार हमारी संस्कृति में नहीं है। साथ ही, जबरन धर्मांतरण कभी स्वीकार्य नहीं हुआ। यह मानवता के विरुद्ध है।

आज के वैश्वीकरण (ग्लोबलाइजेशन) की अवधारणा हमारे लिए नई नहीं है। हमारे यहां "वसुधैव कुटुम्बकम" अर्थात् 'पूरा विश्व एक परिवार है', हजारों साल से मूर्त रूप से चला आ रहा है। आवागमन व निवास के अधिकार, उपर्युक्त सिद्धांत के अवयव हैं।

हमारी संस्कृति में पशु, पक्षी, पेड़,–पौधों, नदियों को सदैव आदर से देखा गया है, पर्यावरण की रक्षा, हमारी जीवन–शैली का अभिन्न अंग रहा है। शिव को पशुपतिनाथ, अर्थात् पशुओं का रक्षक कहा गया है। उनके द्वारा वनों की रक्षा की गई। **flora and fauna** की रक्षा हमारी संस्कृति का मूल है। भारत आज विश्व के पटल पर पर्यावरण रक्षा में अग्रणी है। मातृभूमि का ऋण, पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन से चुकाना हमारी सांस्कृतिक परम्परा है। बरगद, पीपल, तुलसी की रक्षा, गंगाजल की शपथ भारतीय दर्शन में ही संभव है।

हमारी संस्कृति में महाभारत के युद्ध काल में सूर्यास्त के पश्चात् विरोधी पक्ष दूसरे के खेमे में निडरतापूर्वक विचरण करते थे, घायलों से मिलते थे। यह मानव अधिकारों के संरक्षण का उच्चतम स्वरूप प्रदर्शित करता है। 'मुंडकोपनिषद्' में उल्लेखित 'सत्यमेव जयते' को राष्ट्रीय प्रतीक में स्थान दिया गया है। यह भारत में प्रचलित मूल्यों की जीवंत अभिव्यक्ति हैं। 12वीं शताब्दी में 'बसवेश्वर' द्वारा आयोजित 'अनुभव मंडप' जिसमें विश्व के दार्शनिकों और समाज सुधारकों ने भाग लिया, को "दुनिया की पहली संसद" के रूप में जाना जाता है। यह भारतीय सुधारकों के दूरदर्शी दृष्टिकोण को इंगित करता है। ऐसे इतिहास और परम्पराओं वाले देश को कभी भी असहिष्णु नहीं माना जा सकता।

बौद्ध धर्म के प्रचलित सिद्धांत भी मानव अधिकार चार्टर में प्रचुरता से परिलक्षित है। महान सम्राट अशोक के राज्य में बंदियों के साथ यातना व अमानवीय व्यवहार निषिद्ध था। यहां तक कि

तत्कालीन दासों व सेवकों के साथ अच्छा व्यवहार धर्म ने सुनिश्चित किया।

"अहिंसा परमो धर्म" का सिद्धांत 'शान्डिल्योपनिषद्' में उल्लेखित है। राम व कृष्ण ने अहिंसा का पाठ दिया व हिंसा का सहारा सिर्फ धर्म और मानवता की रक्षा के लिए ही लिया जाए। भारत में 4 प्रमुख धर्म (सनातन, बौद्ध, जैन और सिख) और कई छोटे धर्मों ने जन्म लिया। इनके अतिरिक्त, इस्लाम धर्म में भी 'अहिंसा' अभिन्न भाग रहा है। हमारे यहां 'मनसा वाचा कर्मणा'–किसी को दुःख नहीं दिया जा सकता। भारत में दुनिया भर से विभिन्न संस्कृतियों के लोग आए। लेकिन अंततः सभी हमारी समृद्ध संस्कृति और परम्पराओं का हिस्सा बन गए चाहे वह छठी ईसा पूर्व में यहूदी शरणार्थी हों, या आधुनिक समय में तिब्बती, श्रीलंकाई या अफगानी। भारत में शरणागत को सुरक्षा प्रदान कर मानव अधिकारों की रक्षा की एक लंबी परम्परा रही है।

हम विभिन्न मंदिरों और पुरातत्व महत्त्व के कलात्मक निर्माण को देख सकते हैं। 'एलोरा गुफा' और 'खजुराहो मंदिर', जिन्हें यूनेस्को विरासत स्थलों के रूप में भी मान्यता दी गई है। ऐसे कई उदाहरण हैं जहां विभिन्न संस्कृतियों के अनुयायी एक ही स्थान पर एक साथ पूजा करते हैं। यही सद्भाव व सह–अस्तित्व हमारी संस्कृति है। सिख गुरू द्वारा शुरू की गई 'लंगर' या 'सामुदायिक रसोई' की अवधारणा, जरूरतमंद व्यक्तियों को पोषण का अधिकार सुनिश्चित करती है।

इस्लाम धर्म में भी समाजवादी सिद्धांत निहित है। इस्लाम में सूफी का सम्मिश्रण हुआ व 'दीन ए इलाही' द्वारा सभी धर्मों की समानता की खोज भी हुई।

रामायण में मानव अधिकार का सुन्दर चित्रण है– *"परहित सरिस धर्म नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाइ"* हमारे भक्ति

दर्शन में जात–पांत, लिंग व रंगभेद को स्थान नहीं रहा है, जो मानवता के लिए महत्त्वपूर्ण है।

गुरू नानक देव ने कहा "मानस की जात सवै एकै पहिचानबो"

भारतीय सभ्यता ने सभी को अपनाया। विभिन्न धर्मों को समाहित (**assimilate**) करना हमारी संस्कृति की शक्ति है। यह हमारी कमजोरी नहीं, वरन एकात्मता के मानवीय मूल्य का संरक्षण है।

भारत शिक्षा के क्षेत्र में विश्व गुरू रहा है नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला आदि विश्वविद्यालयों में से अनेक में 10000 से अधिक विद्यार्थी यूरोप व एशिया के विभिन्न देशों से शिक्षा प्राप्त करते थे। गरीबों को निःशुल्क प्रारम्भिक शिक्षा पुरातन काल से आज तक भारत में प्रचलित है व भारतीय संविधान में प्रदत्त मूल अधिकार है। गणित भी भारत की विश्व को देन है।

संस्कृत संभवतः विश्व की सबसे प्राचीन भाषा है 'ऋगवेद' संस्कृत में 2500 वर्ष ईस्वी पूर्व लिखा गया। योग संपूर्ण विश्व को भारत की देन है। योग का मतलब '**Union of things**' है। योग को यूनेस्को की 'अमूर्त' सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल किया गया है। योग से प्रदत्त दक्षता, स्वास्थ्य, सकारात्मक सोच व क्रियाकलाप द्वारा विश्व शांति व मानव हित सुनिश्चित है।

संस्कृति, कला व संगीत हमारी आत्मा के पोषक तत्व रहे हैं व ईश्वर आराधना के माध्यम हैं। संगीत में देश की आत्मा परिलक्षित होती है। कला के क्षेत्र में पूर्ण अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता रही है। कला, परम्पराओं की अभिव्यक्ति है जिसमें प्रेम, घृणा, आशा, क्षमा, भय और सहानुभूति सम्मलित हैं। मानव अधिकार क्षेत्र में औपचारिक माध्यम की अपेक्षा संगीत और कहानी सुनाना अधिक प्रभावशाली है।

नारी का सम्मान हमारी परम्परा है। दुर्गा पूजा के उत्सव को हाल ही में यूनेस्को की 'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची' में भी जोड़ा गया है। वैदिक काल से ही महिलाओं ने उच्चतम विद्वता से शास्त्रार्थों में भाग लिया और वेदों के लेखन में योगदान दिया। घोषा, लोपामुद्रा, मैत्रेयी और गार्गी इसके कुछ उदाहरण हैं।

किसी भी सभ्यता ने स्वास्थ्य और स्वच्छता को उतना महत्त्व नहीं दिया जितना सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों ने दिया। प्राचीन भारतीय सर्जन सुश्रुत, 7वीं शताब्दी ईसा पूर्व, को "प्लास्टिक सर्जरी का जनक" माना जाता है। उन्होंने नाक के पुनर्निर्माण के लिए माथे की त्वचा का उपयोग किया। चरक ने उपमहाद्वीप में चिकित्सा की नींव रखी थी।

मानव अधिकारों का पाठ भारत ने विश्व को पढ़ाया। आज भी विश्व के कई देशों में मानव अधिकार सुरक्षा संबंधी संस्थाएं ही

नहीं हैं। कई ऐसे देश हैं जो आज भी रंगभेद व जातीय व धार्मिक भेदभाव व हिंसा से उभर नहीं पाए हैं।

हमारी संस्थाऐं मानव अधिकारों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु सक्षम है। मैं गर्व के साथ कह सकता हूं कि भारत में जो ढांचा मानव अधिकार संस्थाओं का राष्ट्रीय व राज्यस्तर पर है, वैसा किसी अन्य देश में नहीं है। न ही इतना कार्य किसी अन्य देश में मानव अधिकारों के संरक्षण हेतु संबंधित संस्थाओं द्वारा किया जाता है।

मानव अधिकारों का विस्तार किसी भी देश की सीमाओं में नहीं बंधा है। इनका पालन सबको आवश्यक है। जिससे 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना फलीभूत हो। हिंसा की घटनाएं व आतंकवादियों द्वारा निर्दोश लोगों को मारना आज चिंता का विषय है। हमें आतंकवाद को जड़ से उखाड़ना होगा। हमारा मानव शरीर धारण करना तभी सार्थक होगा जब हम इस मानवता व

मानव अधिकारों का संरक्षण व संवर्धन कर भारतीय संस्कृति में नए आयाम जोड़कर भारत को विश्व में पूर्व की भांति अग्रणी रख सकें।

श्री अरविन्दो ने कहा है कि,

"**Mother India is not a piece of earth; she is a power, a Godhead India will be "the moral leader of the world"**

"The sun of India's destiny would rise and fill all India with its light and overflow India and overflow Asia and overflow the world."

धन्यवाद, जय हिंद।

*****